प्रातः क्लास 20/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
इन आँखों से भल दादा को देखो; परन्तु बुद्धि से याद शिवबाबा को करो अर्थ सहित। मनमनाभव मद्याजीभव का भी अर्थ यह है। शिवबाबा को याद करना और बेहद सुख की राजाई को याद करना। कोई और तकलीफ नहीं है। निरोगी भी बनना है। और डबल सिरताज विश्व का मालिक भी बनना है। यह बुद्धि में जरूर याद रखना है। (याद की यात्रा)

ओमशान्ति। यह 15मिनट क्या कर रहे थे। एवर निरोगी बनने लिए याद करके सतोप्रधान बन रहे थे। क्योंकि तुम जब अपनी राजधानी में सतोप्रधान थे तो निरोगी थे। कंचन काया थी। 21 जन्मों के लिए निरोगी बनना है। कितना सहज है। कोई दवाई आदि करने की बात नहीं। बाप अविनाशी सर्जन भी है तो वैद्य भी है। कितनी सहज युक्ति बतलाते हैं। सिर्फ कहते हैं अपन को आत्मा समझ बाप को याद करने से एवर हेल्दी एवर वेल्दी बनना है। कहाँ के लिए? नई दुनिया के लिए। इस संगमयुग पर ही तुम अमर पद पाते हो। वहाँ कोई रोग बीमारी आदि कुछ भी नहीं होता। सतोप्रधान दुनिया है ना। सभी निरोगी। बाप तुम बच्चों को 100% हेल्दी बनाते हैं। तो ऐसे बाप को कितना खुशी से याद करना चाहिए। हर्षित मुख होकर। बाप गैरन्टी देते हैं मीठे–2 बच्चों तुम्हारे जो भी पाप हैं जिससे तुम दुख उठाते आये हो वह इस योग अग्नि से सभी पाप भस्म हो जावेंगे। जले थे। 5000 वर्ष पहले भी तुम निरोगी बने थे। अनेकानेक बार बने हो। बाप ने स्मृति दिलाई है। बरोबर हम आत्माएँ हर 5000 वर्ष बाद श्रीमत पर चल एवर हेल्दी बनते हैं। सो भी जन्म–जन्मान्तर अर्थात् 21 जन्मों के लिए। जो अभी पुरुषार्थ कर पद पावेंगे वही कल्प–2 पाते रहेंगे। अच्छी रीत योग लगावेंगे तो सज़ाओं से छूट जावेंगे। नहीं तो फिर कल्प–कल्पान्तर सज़ा खानी पड़ेगी। बाप एक सेकेण्ड में मुक्ति–जीवनमुक्ति का वरसा देते हैं। बच्चा माँ के गर्भ से बाहर निकला और वरसे का हकदार बना। उसमें बच्चे और बच्चियाँ होती हैं। यहाँ तुम सभी बच्चे ही बनते हो। बाप को पहचाना और स्वर्ग का वरसा पा लिया। फिर है पुरुषार्थ करना ऊँच पद पाने का। जितना याद की यात्रा में जास्ती रहेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। और कोई तकलीफ नहीं। पढ़ने लिए कोई किताबें आदि भी नहीं। इनको कहा जाता है ज्ञान और विज्ञान। वास्तव में सच्चा2 ज्ञान–विज्ञान भवन तो यह है। वह तो सिर्फ नाम मात्र है गवर्मेन्ट का ज्ञान–विज्ञान भवन। जहाँ अनेक भाषाओं में लेक्चर होती है। तुम तो उस अमरपुरी में जाते हो जहाँ एक भाषा एक राज्य होता है। इन ल0ना0 का एक राज्य था। दूसरा कोई खण्ड नहीं था। भारत को सच खण्ड झूठ खण्ड कहते हैं। यह भारत ही अविनाशी खण्ड है, यह कब विनाश नहीं होता। शास्त्रों में दिखाया है महाप्रलय हो जाती है; परन्तु प्रलय तो होती नहीं है। इनको छोटी प्रलय कहेंगे। सिर्फ एक भारत खण्ड रह जाता है। बाकी सभी खण्ड विनाश को पाते हैं। एक भारत खण्ड कब विनाश को नहीं पाता। बाकी हाँ, तमोप्रधान झूठखण्ड बन जाता है। किससे झूठ खण्ड बनता, सचखण्ड किससे बनता यह भी अभी तुम्हारी बुद्धि में है। आधा कल्प भक्ति से झूठखण्ड बन जाता है। बाप कहते हैं वेदों–शास्त्रों, यज्ञ–तप, दान–पुण्य आदि से कुछ भी मेरे को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इनसे तो और ही तुम दुर्गति को पाते आये हो। समझते हो हम तमोप्रधान बने हैं। बनना ही है। सृष्टि को भी सतोप्रधान से सतो॰ रजो॰ तमोप्रधान बनना ही है। नीचे उतरना पड़ता है। यह खेल है। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। कैसे बने, उसके लिए यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। उत्तम ते उत्तम पुरुष बनेंगे तो नारी भी बनेगी ना। तुम पुरुषोत्तम और पुरुषोत्तमनी बनते हो। जो जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। पवित्र भी बनना है। बाप ने समझाया है जब तुम पवित्र थे तो विश्व के मालिक थे। डबल सिरताज थे। लाइट का भी ताज था। यह भी सिर्फ समझाने लिए दिखाया जाता है। बाकी वहाँ कोई ऐसी लाइट दिखाई नहीं पड़ती है। वहाँ सभी पवित्र ही रहते हैं। इसलिए पवित्रता का ताज(लाइट) दिखाया जाता है। बाकी ऐसी रोशनी कोई बाहर से चमकती नहीं है। फिर जब वाममार्ग में गिरते हैं तो यह निशानी नहीं रहती। भल सन्यासी आदि को देते हैं; परन्तु वह आर्टीफिशियल दे देते हैं। देवताएँ तो हैं सर्वोत्तम पवित्र।

वह है ही स्वर्ग में। उनको कहा जाता है गोल्डेन एज। अभी है आयरन एज। आत्मा आयरन एजेड बनती है तो जेवर भी आयरन एजेड बन जाते हैं। गाते भी हैं ना मैं निगुर्ण हारे में कोई गुण नाहीं। रहम दिल बाप को ही कहा जाता है। ब्लीसफुल, नालेजफुल, प्युरिटीफुल उनको ही कहा जाता है। वह सभी बातों में परफेक्ट है। सुप्रीम कहा जाता है। और कोई आत्मा को सुप्रीम नहीं कहेंगे। सिवाय एक बाप के। एक बाप ही सदैव वहाँ रहते हैं। बाकी तो सभी हैं देहधारी। शरीर धारण कर आते हैं पार्ट बजाने। हरेक आत्मा को जो शरीर मिलता है उस पर नाम जरूर पड़ता है। हर जन्म में नाम–रूप, देश–काल फीचर्स बदलते हैं। वर्ष गुजरा, मास गुजरा, घंटे गुजरे.....सतयुग से लेकर गुजरते–2 अभी कलियुग अन्त तक आये गिरे हो। अभी तुम बच्चों को स्मृति आई है। कैसे हम सतोप्रधान से उतरते–2 आकर तमोप्रधान पतित बने हैं। 84 जन्म पूरे हुए। अभी फिर पहले नम्बर में जाना है। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी तो रिपीट कहा जाता है। वह सतयुगी हिस्ट्री जागराफी रिपीट कहा जाता है। कलियुग की तो चल ही रही है। फिर सतयुग के हिस्ट्री जागराफी को रिपीट होनी है। जिसके लिए ही अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम जानते हो हम अपने बेहद के बाप से बेहद के सुख का वरसा फिर से लेते हैं। यह 84 का चक्र बुद्धि में याद रहना चाहिए। बाप से हमने यह सतयुगी राज्य अनेक बार लिया है। वन्डर ऑफ दी वर्ल्ड दिखाते हैं ना। जो ताज महल आदि माया के सात वन्डर्स हैं। माया के वन्डर्स हैं सात। बाप का वन्डर तो एक ही है जिसको स्वर्ग, पैराडाइज कहा जाता है। यहाँ के वन्डर्स में क्या रखा है। सुख की तो बात ही नहीं। यह तो बैठकर बनाये हैं। जैसे चीन की दीवाल कहते हैं। बड़ी मेहनत से बनाई है। मनुष्यों को मालूम नहीं है। वन्डर ऑफ वर्ल्ड सचमुच यह आबू का दिलवाला मंदिर है। जिसमें आदि देव आदिदेवी का और बच्चे बैठे हैं। ऊपर में है स्वर्ग। नहीं तो कहाँ बनावेंगे। ऊपर में राजाई, नीचे में तपस्या कर रहे हैं। अभी तुम ही राजऋषि। वह है हठयोग ऋषि। ऋषि पवित्र को कहा जाता है। पवित्रता तो जरूर चाहिए ना। फिर आधा कल्प पवित्र ही रहेंगे। ऐसे नहीं फिर विख से जन्म ले पवित्र बनेंगे। जैसे सन्यासी बनते हैं। नहीं। श्रीकृष्ण को महात्मा कहते हैं; परन्तु वह तो एवर महात्मा है। यह सन्यासी लोग तो फिर भी विकार से जन्म ले महात्मा बनते हैं। इन बातों को मनुष्य नहीं जानते। बड़े अच्छे2 नामीग्रामी सन्यासी हैं। बम्बई में एक शेर को पालने वाला सन्यासी था। शिमले में भी शेर ले गया था; परन्तु महान व्यभिचारी। फिर शादी कर बच्चे आदि भी पैदा कर लिया। शुरू में उनके पास बहुत बड़े2 आदमी जाते थे। ऐसे2 सन्यासियों के लाखों फॉलोअर्स बन जाते हैं। नाम बाला हो जाता है। तुम कोई के अन्धश्रद्धालु फॉलोअर्स नहीं हो। फॉलोअर नाम तो ठहरता भी नहीं। कहाँ2 वह सन्यासी कहाँ वह गृहस्थी ट(ट्)टू। फॉलोअर को तो फिर पूरा फॉलो करना चाहिए। तुम सच्चे2 फालोअर्स हो। पवित्र भी बनते हो। तुमको फॉलो करना है शिवबाबा को। शिव की बारात सेना है ना। शिवबाबा की कितनी बारात है? 4½ सौ करोड़। शंकर की बारात नहीं कह सकते हैं। शिव की बारात है। शंकर तो वास्तव में है नहीं। यह भक्तिमार्ग में अनेक ढेर के ढेर चित्र बनाते हैं। अभ्सी(अभी) सूढ़ वाला गणेश ऐसा कोई हो सकता है क्या। बड़े मिनिस्टर्स आदि की भी बुद्धि नहीं चलती है। सूढ़ वाला देवता फिर कहाँ से आया। ऐसे कोई मनुष्य होते हैं क्या। हनुमान बन्दर को कितना पूजते हैं। आगे तुमको भी यह समझ नहीं थी। अभी बाप ने कितनी समझ दी है। बाप क्या से क्या बनाते हैं। पहले तो गुरु आदि लोग जो सुनाते थे वह सत सत करते रहते थे। अभी तुम नहीं मानेंगे। तुम समझते हो ऐसे हो नहीं सकता। भक्तिमार्ग में क्या2 करते रहते हैं। कितना वेस्ट ऑफ टाइम करते हैं। लौकिक बाप भी बच्चों को धन देता है तो कोई कोई कपूत बच्चे हो पड़ते हैं तो वह झट धन उड़ा देते हैं। वह हैं हद के कपूत बच्चे। अभी बेहद का बाप तुम बच्चों को कहते हैं मीठे2 बच्चों आज से 5000 वर्ष पहले तुमको विश्व की बादशाही दी थी। कितने हीरे जवाहर आदि थे। तुम्हारे शास्त्रों में भी है ना सागर से देवताएँ निकले रत्नों की थाली भरकर देते थे। अभी तुम झोली भरते हो ना। यह है ज्ञान रत्न जिससे झोली भरनी है। बाप को याद नहीं करते हैं। तो सारा ज्ञान बह जाता है। धारणा नहीं होती।

सतयुग में तुम कितना साहुकार थे। विश्व के मालिक थे। अथाह धन, हीरे–जवाहर थे। भक्तिमार्ग में ही सोमनाथ के मंदिर को कितना सजाया था। तो सतयुग में कितना अथाह धन होगा। बाप कहते हैं इतना सभी अथाह धन कहाँ गंवाया? भक्तिमार्ग में सारा वेस्ट किया। मंदिर बनाकर दान–पुण्य किए, लूटकर ले गये। भक्ति में धक्का खाते धन गंवाते2 अभी एकदम खाली हो गये हो। फिर बाप आकर सॉलवेन्ट बनाते हैं। भारत 100% सॉलवेन्ट था। फिर 100% इनसॉलवेन्ट बना है। भीख मांग रहे हैं। चित्र में भी तुमने दिखाया है। इसमें डरने की कोई बात ही नहीं। भारत बेगर तो बरोबर है। तुम बच्चों को यह स्मृति आई है हम विश्व के मालिक, बड़े ही साहुकार थे। अभी भारत क्या बन गया है। धन बिगर तो सुख होता ही नहीं। बेहद का बाप ज्ञान का सागर तुम बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्नों का खज़ाना देते हैं। तो यहाँ बैठे बाप को भी याद करो, राजधानी को भी याद करो। तुम कितना साहूकार थे। हरेक चीज़ बिल्कुल ही नई थी। हीरे जवाहर की खानियाँ थी। 5तत्व भी वहाँ सतोप्रधान होने कारण ऑर्डर में रहते थे। प्रकृति दासी बन जाती है। कब बेकायदे गर्मी, वा बेकायदे वर्षा आदि हो न सके। नदियों की उथल–पुथल आदि कोई भी बेकायदे काम नहीं होता। दुख की रिंचक भी बात नहीं। वहाँ थोड़े ही अगरबत्तियों आदि की दरकार रहेगी। वहाँ तो नेचरल खुशबुएँ होती हैं। बदबुएँ वाली कोई चीज़ होती ही नहीं। यह लकड़ियाँ आदि थोड़े ही वहाँ जलाते हैं जो धुआँ हो जाये। नाम ही है स्वर्ग। हेविन। अभी तुम पढ़ रहे हो। जैसे अलफ बे नीचे धरती पर बैठ पढ़ाते हैं ना। बाप भी देखो कैसे बैठ पढ़ाते हैं। भगवानुवाच तो है ना; परन्तु भगवान कौन है यह मनुष्यों को पता नहीं है। भगवान को तो पत्थर भित्तर में ठोक दिया है। और फिर कृष्ण को भगवान कह देते। वह तो है नई दुनिया का प्रिन्स। कितना फर्क है। इस संगमयुग पर ही फर्क का मालूम पड़ता है। बाप की जीवन कहानी में, पूरे 84 जन्म लेने वाले का नाम डाल दिया है। तो कितना हाहाकार हो गया है। फिर जयजयकार होगा। हाहाकार के बाद होता है जयजयकार। खूनी नाहक खेल बना हुआ है। तो तुम देख भी न सकेंगे। कच्ची अवस्था वाले तो डर से ही मर जावेंगे। यवनों की है बहुत कड़ी लड़ाई। रक्त की नदियाँ बहनी है। बाहर में नहीं। वहाँ तो गोले छोड़ेंगे। श्वाँस लिया और यह मरा। यहाँ है खूनी नाहक मौत। कौरवों और यवनों की लड़ाई होती है यहाँ। बॉम्स कोई यहाँ नहीं आवेंगे। यहाँ भारत को बहुत दुख भोगना होता है। फिर अथाह सुखों में चले जावेंगे। अति दुख से फिर अति सुख मिलेगा। यह अनादि खेल बना हुआ है। यह बाप विस्तार से बैठ समझाते हैं। बाकी नटसेल में तो कहते हैं मीठे2 बच्चे तुम जानते हो बाप आया हुआ है हमको अमरकथा सुनाने। सूक्ष्मवतन वा मूलवतन में नहीं सुनते हैं। बाप को तो सुनाने लिए जरूर मुख चाहिए ना। इसको कहा जाता है ज्ञान अमृत। अमृत कोई पानी नहीं है। नॉलेज है; परन्तु समझाने लिए कहा जाता है अमृत छोड़ विख काहे को खाये। मनुष्य फिर पानी को ही अमृत समझ कहाँ–कहाँ पहाड़ों पर जाते हैं। पहाड़ों पर मंदिरों में गऊ का मुख बना दिया है। पहाड़ों से पानी तो सदैव आता ही रहता है। कुआँ में भी पानी इकट्ठा होता है ना। तो वह सभी है भक्तिमार्ग। कितने कष्ट सहन कर तीर्थों पर जाते हैं। कोई तो रास्ते में ही मर जाते हैं। तुम्हारी यात्रा कितनी सहज है। खाते–पीते, भोजन बनाते तुम याद की यात्रा में रह सकते हो। बाप ने कहा है बच्चों मुझ बाप को याद करेंगे तो तुम्हारे सभी पाप कट जावेंगे। यह है योग–अग्नि। वह है काम अग्नि। अभी सभी काम–चिक्षा पर बैठ जल मरे हैं। काले हो पड़े हैं। सभी कब्रदाखिल हैं। फिर मैं आकर सभी को जगाकर ले जाता हूँ। डायरैक्शन देता हूँ अपन को आत्मा समझो। आत्मा अविनाशी है। उनको पार्ट मिला हुआ है। उनको कहा जाता है अनादि अविनाशी ड्रामा। जो भी 4½ सौ करोड़ आत्माएँ हैं सभी अविनाशी पार्टधारी हैं। ऊपर से आती रहती हैं। फिर बाप आकर सभी को ले जाते हैं। यह पार्ट रिपीट होता रहता है। कब घिसता नहीं। इतनी छोटी आत्मा भी कब घिसती नहीं। इन आँखों से भी देखी नहीं जाती। जैसे स्टार्स कितने छोटे दिखाई पड़ते हैं। है तो बड़े ना। मन तक भी जाते हैं। यह सभी है साइंस का झूठा घमण्ड। समझते हैं एक एक स्टार में दुनिया है। साइंस से ही सभी सीखते हैं। साइंस से फायदा भी बहुत है। यह बिजली आदि सभी वहाँ काम में

आवेगी। कोई भी बास वाली चीज़ होती ही नहीं। गइयाँ भी बहुत दूर–2 रहती हैं। उन्हों का गोबर भी सोना जैसा ही होगा। काला छी–छी नहीं। जंगल होते ही नहीं। बगीचा ही बगीचा होता है। तो तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। अतिइन्द्रिय सुख का गायन है पिछाड़ी का। स्कूल में भी पिछाड़ी को रिज़ल्ट निकलती है। रिज़ल्ट देख फिर ट्रान्सफर हो जाते हैं। यह भी रिजल्ट देख, सा0 कर फिर ट्रान्सफर होंगे। अच्छे2 जो हार खाकर गिरते हैं सभी को सा0 होगा। शुरू में भी तुमको ढेर सा0 होते थे खुशी में लाने लिए। तुम तो वहाँ जैसे फरिश्ते रहते थे। समझते थे यह सच्ची खुदाई खिजमतगार है; क्योंकि बाप तुम बच्चों के साथ मददगार था। जो कुछ देखा पास हुआ नथिंग न्यु। फिर भी होगा। इनको कहा जाता है भावी। कोई मरता है तो मनुष्य कहते हैं ईश्वर की भावी; परन्तु ईश्वर कहते हैं ड्रामा की भावी। यह बना बनाया ड्रामा है। मैं भी ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ हूँ। एक सेकण्ड भी आगे पीछे मैं नहीं आ नहीं सकता। बिल्कुल एक्युरेट ड्रामा चलता है। इनको बेहद का अविनाशी ड्रामा कहा जाता है। बनी बनाई बन रही.....ड्रामा प्लैन अनुसार होना ही है फिर चिन्ता काहे की। ड्रामा अनुसार उनको एक शरीर छोड़ दूसरा लेना ही है। सभी पार्टधारी हैं। तुमको कब रोना नहीं है। हरेक अपना पार्ट बजा रहे हैं। एक पार्ट पूरा किया फिर जाकर दूसरा बजावेंगे। माँ–बाप, सम्बन्धी आदि सभी बदल जावेंगे। रोने की क्या दरकार है। सतयुग से त्रेता अन्त तक तुम कब रोते ही नहीं। यह पढ़ाई है एक बार पढ़ने से 21 जन्म का वरसा मिलता है। बाप से भी वरसा मिलता है। तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। अभी यह अन्तिम जन्म है। पाई–पैसे के लिए क्या बैठ पढ़ाई पढ़े। सभी कुछ खत्म हो जाना है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार भल सम्भालो; परन्तु श्रीमत पर चलो। बाप को ट्रस्टी बनाकर राय लेते रहो। भल मकान आदि बनाओ विलायत घूमने जाओ। बाबा कोई मना नहीं करते हैं। डायरैक्शन सभी देते रहेंगे। पवित्र रहना है। बाप की याद में रहना है। दैवीगुण भी धारण करना है। और कुछ भी मेहनत आदि नहीं कराते हैं। बाप को पहचाना, स्वर्ग का वरसा तो होगा ही। तुम कोई सगीर नहीं हो बालग हो। शरीर बड़ा है। आत्मा को तो सगीर वा बालग नहीं कहा जा सकता। यह बड़ी समझने की बातें हैं। आत्मा बहुत छोटी है, 84 जन्मों का पार्ट बजाती ही रहती है। यह ज्ञान कोई शास्त्रों में नहीं है। न कोई मनुष्य जानते हैं। बाप ही बैठ तुमको अच्छी रीत समझाते हैं। वही ज्ञान का सागर है। नॉलेजफुल है। उनको झाड़ का बीजरूप कहा जाता है। सत्तचित, आनन्द का सागर, पवित्रता का सागर है ना। कृष्ण की महिमा और बाप की महिमा बिल्कुल ही अलग है। अभी तुम बेहद के बाप से वरसा लेते हो। यह (ल0ना0) बनने के लिए। शिवबाबा से पढ़ते हो यह बनने लिए। नई बात है ना। नई दुनिया के नई बात नया सुनाने वाला है ना। वह तो समझते हैं कृष्ण सुनाते हैं। तुम समझते हो कृष्ण अगर होता तो उनको सभी जान लेते हैं। कृष्ण को याद करने से पाप नहीं कटते। पतित–पावन कृष्ण को नहीं कह सकते हैं। एक बाप ही सर्व की सद्गति दाता है। पतित दुनिया में कोई भी पावन होता नहीं। अभी तुम यह (देवता) बन रहे हो। तो अब पुरुषार्थ कर सतोप्रधान बनना है। ऐसे नहीं कि पानी से पावन बनना है। नहीं। अपन को आत्मा समझ स्वीट बाप को याद करना है। वह एवर स्वीट बाप है। मोस्ट बिलवेड है। विश्व की बादशाही देते हैं। ऐसे बाप को भूलना न चाहिए। भगवान टीचर बन पढ़ाते हैं। तो और क्या चाहिए। कितनी खुशी होनी चाहिए बच्चों को। इस पढ़ाई से तुम क्या बनते हो? नर से ना0। भगवान कैसे पढ़ाते हैं यह जान लिया ना। बाप हमारा ओबीडियन्ट बाप भी है, टीचर भी है। सतगुरु भी है। तुमने बुलाया है ना। बाप को निमंत्रण दिया है कि बाबा आओ। आकर हम पतितों को पावन बनाकर ले चलो। बाप कैसे एक्युरेट टाइम पर आते हैं। इसलिए बाप कहते हैं मीठे–2 बच्चों। बाप का बच्चों पर बहुत लव है ना। उस लव से ही तुम बच्चों को विश्व का मालिक बनाते हैं। नहीं तो लौकिक बाप तो काम कटारी के नीचे गिरा देते हैं। सारी दुनिया कोसघर है। एक/दो को छूरी मारते रहते हैं। तुम विश्व की बादशाही योगबल से लेते हो। अच्छा, मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को नमस्ते।